सुहानी दीपावली का आधार मन-मंदिर की सफाई

सारी साफ-सफाई हो गई, हर चीज़ बदल दी गई, अब सब नया है। घर की दीवारों की रंगाई के साथ ही कुछ नये बर्तन, नये जेवर और नये सामानों के साथ कपड़े भी नये। कुछ भी अब पुराना नहीं रहा। यहाँ तक कि इतने दीये जला दिये हमने की अंधेरे का भी अस्तित्व मिट गया। चारो ओर खुशी, आत्मीयता, प्रेम, उमंग और प्रकाश के मध्य धन-धान्य का भंडार लिये माँ लक्ष्मी का आगमन हर आत्मा के जीवन में सम्पन्नता और सम्पूर्णता ले आया। ये है दीपावली का वो श्रेष्ठ त्योहार, जिसकी प्रतीक्षा पूरे वर्ष हम सभी को रहती है। और ये दिन कुछ पल की खुशियां अवश्य देकर जाता है हमें, क्योंकि कुछ पल ही सही, पर उस पल में हम सभी ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, ऊँच-नीच की भावना से परे... बस खुशियों का आह्वान करते और खुशियों में ही जीते हैं।

अब ज़रा विचार करके देखिये, जब सिर्फ कुछ पल सारी बुराइयां, सारे दुःख, सारे मनोविकार, सारे गिले-शिकवे भूलकर जब खुशियों के बारे में ही सोचा तो

वो पल खुशियों से भर गया। तो सोचिए, अगर हम हर पल इन मतभेदों और मनभेदों को भूल सिर्फ खुशियों के बारे में सोचें तो हमारा हर पल खुशियों से भरा होगा। और यही तो हम सभी चाहते हैं 'सुख और शांति', और इसी का यादगार तो है यह दीपावली उत्सव।

कहते हैं बुराई पर अच्छाई की विजय का पर्व है ये, अंधेरे पर रोशनी की विजय का पर्व है ये, तो क्या केवल सिर्फ घर की साफ-सफाई से हमारे मन की गंदगी दूर हो जायेगी, मन का मैल धुल जायेगा? क्या दीपों की लड़ियां हमारे अज्ञान-अंधकार, बुद्धि पर छायी अमावस्या की काली रात्रि को मिटा पायेगी? हम सभी जानते हैं कि दीपावली से पूर्व दशहरा आता है, जब विकारों और बुराइयों रूपी रावण का पूर्णतः अंत होता है, लेकिन उसका अंत करने से पूर्व नौ दिन व्यसनों, विकारों और व्यर्थ से मुक्त रह, उपवास अर्थात् दैहिक, सांसारिक व्यर्थ बातों से ऊपर उठकर शक्ति की आराधना करनी होती है। हर दिन एक नई शक्ति अर्जित करते हुए हम दस विकारों रूपी रावण का वध करने के योग्य बन पाते हैं। रावण, ये कोई राक्षस या पंडित विद्वान नहीं, अपितु हम सभी में विद्यमान बुराइयों, नकारात्मकता और पाप का प्रतीक है। इतने वर्षों से संसार के हर प्राणी में व्याप्त रावण का वध करने के लिए और उज्जवल भविष्य की खुशियां मनाने से पूर्व हमें तपस्यामूर्त स्थिति स्वयं की बनानी है। तपस्या का अर्थ, हमारा हर छोटे से छोटा कार्य भी एक आदर्श प्रस्तुत करे, श्रेष्ठता से सम्पन्न हो हमारा हर एक कर्म। सुप्रीम, सर्वोच्च और ऊँचे ते ऊँचे परमात्मा की स्मृति की ऊँची स्थिति में रहते हुए शक्तियां अर्जित करते जायें, स्वयं में धारण कर खुद को शक्तिशाली बनाते जायें तभी इस बलशाली माया विकारों रूपी रावण पर विजय पा सकेंगे और इस तपस्या से हमारी आत्मा, हमारे मन का अंधकार, मन का मैल पूर्ण रूप से मिट पायेगा और हमारे मन के उजाले से ही होगी सच्ची दीपावली। तब सबकुछ होगा नया अर्थात् सम्पूर्ण रूप से नये हम, एक सम्पूर्ण रूप से नये भविष्य अर्थात् स्वर्णिम युग-सतयुग को इस धरा पर लेकर आयेंगे। जब तक स्वर्णिम युग, एक नवीन युग इस धरा पर नहीं आता और जब तक हम स्वयं में नवीनता नहीं लाते, स्वयं का अज्ञान अंधकार नहीं मिटाते तब तक चाहे हम हर वर्ष रावण के पुतले जला लें या कितने ही दीये जला लें... न इस धरती से दुःखों और पापों का अंत होगा और न ही हमारे जीवन में रोशनी आयेगी।

अगर हम सच में सच्ची दीपावली मनाना चाहते हैं तो पहले तपस्वी जीवन बनाकर सर्व शक्तियां खुद में धारण करें, इन शक्तियों के बल से रावण के दस शीष अर्थात् खुद में निहित विकारों और बुराइयों का अंत करें और फिर आत्म जागृति के साथ पहले स्वयं के मन मंदिर को रोशन करते हुए हर आत्मा के दीप जगाते चलें। एक दिन अवश्य हर आत्म दीप जल उठेगा और इस जहाँ को रोशनी से भर देगा। फिर शायद किसी स्थूल यानी मिट्टी के दीये जलाने या बल्ब लगाने की ज़रूरत ही न पड़े!

ब्राह्मण जीवन का जीयदान क्या...?

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

ब्राह्मण जीवन का जीयदान है - मुरली। ब्राह्मण जीवन की श्रीमत है- मुरली क्योंकि कई पूछते हैं कि बाबा कहते हैं श्रीमत पर चलो, तो वह श्रीमत कौन-सी है? क्या बड़ी दादी कहती, वही श्रीमत है? हमारी निमित्त टीचर जो कहती है, वही श्रीमत है, क्या है श्रीमत? लेकिन यह हमारी दादी जी हैं या निमित्त टीचर्स हैं, वह भी आपको अगर राय देंगे तो किस आधार पर देंगे? मुरली के आधार पर ही देंगे ना! बाबा ने यह कहा है, ऐसे ही कहेंगे ना! मैं आपको ऐसे कहती हूँ कि यह करो, यह तो नहीं कह सकते ना! बाबा ने ऐसे श्रीमत दी है, तो वह श्रीमत हमारी है - मुरली। और आप सबको अनुभव होगा कि मुरली की श्रीमत में इतनी ताकत है, अगर आपको कोई भी दवाई मन्सा की, वाचा की चाहिए, कर्मणा में योगी बनने की चाहिए, सम्बन्ध सम्पर्क में सबसे यथार्थ चलन में चलें, सम्बन्ध में आयें, कोई भी दवाई अगर आपको चाहिए, तो कोई भी मुरली आप हाथ में उठा लो। उसी मुरली में वह मिल जायेगी। तो मुरलियों की बुक या मुरलियों की कुछ कॉपीज़ हर एक को अपने पास रखनी चाहिए, यह हमारी बहुत आवश्यक चीज़ है।

तो यह मन की बीमारियों की सब दवाईयां मुरली में हैं। किसी भी प्रकार के सवालों का जवाब मुरली में मिल सकता है। मन चंचल है, विचलित है उसको अचल बनाने के लिए अगर आप कोई भी मुरली विधिपूर्वक और लगन से पढ़ो तो आपको सब सवालों का जवाब मिल जायेगा।

बाबा ने इतना अच्छा सहज तरीका सुनाया है, मुरली सुनी तो समझो मन की खुराक खाई। जैसे तन के लिए नाश्ता करते हैं तो ताकत आती है ना! ऐसे मन को मुरली सुनने से रिफ्रेशमेंट मिलती है।

यह बुजुर्ग मातायें भी हमारे विश्व विद्यालय का श्रृंगार हैं, माताओं को देख करके बाबा इतना खुश होता था। मातायें कहती बाबा हम पहले आते तो बहुत अच्छा होता, लेकिन बाबा कहता अभी वह ड्रामा तो बदल नहीं सकता। वह तो ड्रामा में लिपट गया ना, इसीलिए बाबा कहता था खास माताओं के ऊपर रहम करता हूँ कि माताओं को इतनी प्वाइन्ट्स याद रखने की ज़रूरत नहीं है। माताओं को और कुछ याद भी न रहें तो कोई बात नहीं तुमको माफ कर दूंगा, कुछ नहीं पूछूंगा। ड्रामा क्या है बताओ, 84 जन्म क्या है? यह सब तुमको फ्री है, इतनी मेहरबानी माताओं के ऊपर करता है। बाबा कहता था चलो, एक अक्षर तो याद रख सकते हैं। ऐसे पोत्रे-धोत्रे की बात घंटों बैठके सुनायेंगी लेकिन मुरली की प्वाइन्ट थोड़ी गुह्य होती हैं इसीलिए भूल जाती है। तो बाबा ने कहा चलो भूल जाती है कोई हर्जा नहीं लेकिन एक अक्षर तो याद रख सकती हो कि नहीं? वो अक्षर कौन सा है - बाबा। बस ये अक्षर याद रखो।

बाबा की तीन बातें... तन-मन-धन सब समर्पण

समर्पणता

राजयोगिनी दादी जानकी जी

एक गीत है ना - बाबा मैं तुम्हें देखता रहूँ, देखता रहूँ...। बाबा को देखने से, बाबा की सुनने से हर्षित होते हैं। ड्रामा की नॉलेज हमारी स्थिति को अडोल-अचल-स्थिर बनाती है। मेरे से किसी ने क्वेश्चन पूछा कि आप कुछ सोचते नहीं हो? मैंने देखा क्या सोचूँ? कल क्या हुआ? अच्छा हुआ, कल क्या होगा? अच्छा होगा। अभी क्या कर रहे हैं? देख रहे हो।

अपनी स्थिति वर्तमान समय कैसी हो? बाबा और ड्रामा। बाबा है करावनहार, ड्रामा कहता है तुम करनहार बनो मैं कराऊंगा। आप 2 मिनट बाबा को सामने देखो, तो साकार, अव्यक्त और निराकारी भासना आती है। भले पैदा पीछे हुए हैं पर साकार बाबा को देख निराकारी स्थिति से अव्यक्त दिखाई पड़ता है। यह बाबा ने ही त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों का मालिक बनाया है। बाबा अभी भी सूक्ष्मवतन में रहता है ना, अगर बाबा मूलवतन में चला जाता तो यह अव्यक्त पार्ट कैसे चलता? तो सूक्ष्मवतन वन्डरफुल है क्योंकि मूलवतन में कोई एक्टिविटी नहीं है। सब युगों में यह युग व यह समय कितना महान है, जो अभी भी बाबा की एक्टिविटी चलती है।

संगमयुग में शिवबाबा पहले साकार ब्रह्मा बाबा में प्रवेश हुआ। मैंने बाबा को गीता पढ़ते हुए देखा है, बाबा गीता पाठ करते साइलेन्स में चला जाता था। कलकत्ते में बड़ के झाड़ के नीचे सुबह को बाबा 10 बजे से शांत में बैठा रहता था। बड़ के झाड़ का नॉलेज वन्डरफुल है। फाउण्डेशन है ही नहीं। अभी हम बेहद बड़ के झाड़ के नीचे बैठे हैं। सारा झाड़ कितना बड़ा फैला हुआ है। अभी बीज की सन्तान हैं, पक्के ब्राह्मण हैं फिर ब्राह्मण सो फरिश्ता, यह फरिश्ते पन की स्थिति भी वन्डरफुल है।

मुख्य बात अन्दर मनोवृत्ति को चेक करो कितनी अच्छी हो गई है और कोई चिंतन नहीं है। मन में भगवान का चिंतन आ गया, मनमनाभव होने लगे। सागर का ज्ञान मिलता है, ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर...वो मंथन कर उसकी गहराई में जाओ तो नया संसार, नई दुनिया जो आ रही है वो दिखाई पड़ रही है। उसमें अनासक्त वृत्ति, उपराम वृत्ति हो, कोई आसक्ति नहीं।

बाबा की तीन बातें तन-मन-धन सब समर्पण। शिवबाबा के आते ही तन-मन-धन समर्पण। फिर मन-वाणी-कर्म बाबा को सामने देखो। मन हमारा मनमनाभव करा दिया है। वाणी, कर्म के साथ सारा दिन-रात श्वास, संकल्प, समय सफल करना है। कुछ भी निष्फल न जाये।

ऐसा कभी नहीं सोचना है कि मेरा कोई सहारा नहीं है। विघ्नों से घबराओं नहीं। विघ्न भल कितना भी बड़ा हो लेकिन अपने संकल्प से कभी भी बड़ा नहीं करो।

ईश्वरीय मर्यादायें ही हमारा स्वधर्म है, इनका पालन दृढ़ता से करें

दृढ़ता

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

संगठन को एकमत बनाने का आधार है फेथ। जब आपस में एक-दो में फेथ रखते हैं तो सहयोग अवश्य मिलता है। आपका कार्य सो मेरा कार्य। फेथ के पीछे मैं और तू, तेरा और मेरा सब समाप्त हो जाता है। फेथ रहे तो कभी भी अभिमान नहीं आयेगा। आपकी महिमा सो मेरी महिमा। आपकी बड़ाई सो मेरी बड़ाई इसलिए हम अपने समान साथी को इतना रिगार्ड दें जो वह आपेही हमें दे, कहना न पड़े यह भी मर्यादा है।

हरेक की विशेषताओं को देखना है। हरेक में बाबा ने कोई न कोई खूबी ज़रूर भर दी है। बड़ी बड़ाई बाबा की है, मेरी नहीं। सदैव अपने सामने लक्ष्य हो...बाबा। बाबा ने हमें निमित्त बनाया है।

लॉ उठाना, टोन्ट कसना, टोक देना, यह मेरा काम नहीं है। मैं कभी भी अपने हाथ में लॉ नहीं उठा सकती। हमें बाबा जो सेवा देता है उसे प्राण देकर करनी है। यह हमारा लक्ष्य हो। फेथ को तोड़ने वाला कांटा है रीस। तो मुझे आत्माओं से रीस नहीं करनी है, रीस करो तो बाबा से क्योंकि हमें बाप समान बनना है।

ईर्ष्या करना मंथरा का काम है। यह वायदा करो कि मैं मंथरा नहीं बनूंगी। ईर्ष्या अथवा विरोध दूसरे की निंदा करायेगा। ईर्ष्या करना यह रावण की मत है। बाप की नहीं।

हरेक की बात का भाव समझना है, स्वभाव को नहीं देखना है। अगर किसी की गलती दिखाई भी देती है तो बाबा ने हमें समाने की शक्ति भी दी है। कभी एक की बात दूसरे से वर्णन नहीं करना है। भल सुनो, लेकिन उसे वहीं पर सुनी-अनसुनी कर दो। भूल को अन्दर रखने से वायब्रेशन खराब होता है। दूसरे की भूल को अपनी भूल समझो।

अपनी स्थिति को सदैव सुखमय रखो। कभी भी तंग दिल, उदास दिल नहीं बनना है। कोई झूठा अपमान करेगा कोई सच्चा। दुनिया की टक्करें अनेक आयेंगी लेकिन हमें उदास नहीं होना है। पत्थर भी पानी की लहरें खा-खाकर पूज्यनीय बनता है। तो हमें भी सब कुछ सहन करके चलना है। हलचल को समाप्त करने का साधन है - बाबा से बातें करना। बाबा के पास जाओ तो बाबा आपेही कदमों में बल भर देगा।

मुझे किसी भी आत्मा पर डिपेन्ड नहीं करना है। आत्मा पर डिपेन्ड करने से बैलेन्स बिगड़ जाता है। बाबा पर डिपेन्ड करो। एक-दो का आधार लेकर चलना बिल्कुल गलत है। मुझे तो साथी चाहिए, सहयोग चाहिए, नहीं। मेरा साथी एक बाबा है। मैं बाबा से ही सहयोग लूँ।

दूसरों को सन्तुष्ट करना - यह बहुत बड़ा पुण्य है, इससे हमारी आत्मा को बल मिलता है। किसी के गुणों पर मोहित नहीं होना है। सदा बाबा को आगे रखो। बाबा को आधार बनाओ तो किसी में भी फसेंगे नहीं।

हमारा संसार बाबा है इसलिए कभी भी अन्दर में यह भावना नहीं आनी चाहिए, यह मेरा स्टूडेन्ट, यह तेरा। किसी भी प्रकार का स्वार्थ न हो। स्वार्थ..अधीन बना देता है। किसी देहधारी में स्नेह जाता है माना स्वार्थ है। इस स्वार्थ से ईश्वरीय मर्यादाओं का उल्लघंन होता है इसलिए साकार बाबा ने हमेशा हमें स्नेह दिया लेकिन स्वार्थ का स्नेह नहीं दिया। तो जैसे हमारा बाबा निःस्वार्थ था वैसे निःस्वार्थी बनो। तो सबसे न्यारे और प्यारे बन जायेंगे।

ऐसा कभी नहीं सोचना है कि मेरा कोई सहारा नहीं है। विघ्नों से घबराओं नहीं। विघ्न भल कितना भी बड़ा हो लेकिन अपने संकल्प से कभी भी बड़ा नहीं करो। जड़ को समझकर उसके बीज को काटो। जड़ क्या है उसको समझो।

माया से डोन्टकेयर करना ठीक है, आपस में नहीं। जो आपस में डोन्ट केयर करते उनकी जुबान पर लगाम नहीं रहता। जो आता वह बोल देते, यह स्वभाव भी डिससर्विस करता है।